HIN3A 16a

सूरदास : poèmes extraits du सूरसागर

राग धनास्री

१ जसोदा हरि पालनैं झुलावै ।
हलरावै, दुलराइ मल्हावै, जोइ सोइ कछु गावै ।
मेरे लाल कौं आउ निँदरिया, काहैं न आनि सुवावै ।
तू काहें नहिं बेगिहिं आवै, तोकौं कान्ह बुलावै ।
कबहुँ पलक हरि मूँदि लेत हैं, कबहुँ अधर फरकावै ।
सोवत जानि मौन ह्वै कै रहि, करि-करि सैन बतावै ।
इहिं अंतर अकुलाइ उठे हरि, जसुमति मधुरैं गावै ।
जो सुख सूर अमर-मुनि दुरलभ, सो नँद-भामिनि पावै ॥४३॥

राग बिलावल

२ नान्हरिया गोपाल लाल, तू बेगि बड़ौ किन होहि ।
इहिं मुख मधुर बचन हँसिकै धौं, जननी कहै कब मोहिं ।
यह लालसा अधिक मेरे जिय, जो जगदीस कराहिं ।
मो देखत कान्हर इहिं आँगन पग द्वै धरनि धराहिं ।
खेलहिं हलधर-संग रंग रुचि, नैन निरखि सुख पाऊँ ।
छिन-छिन छुधित जानि पय कारन, हँसि-हँसि निकट बुलाऊँ ।
जाको सिव-बिरंचि सनकादिक, मुनिजन ध्यान न पाव ।
सूरदास जसुमति ता सुत-हित, मन अभिलाष बढ़ाव ॥६३॥

राग आसावरी

३ घुटुरुनि चलत स्याम मनि-आंगन, मातु-पिता दोउ देखत री ।
कबहुँक किलकि तात-मुख हेरत, कबहुँ मातु-नुख पेखत री ।
लटकन लटकत ललित भाल पर, काजर-बिँदु भ्रुव-ऊपर री ।
यह सोभा नैननि भरि देख, नहिं उपमा तिहुँ भू पर री ।
कबहुँक दौरि घुटुरुवनि लपकत, गिरत उठत पुनि धावै री ।
इततैं नंद बुलाइ लेत हैं, उततैं जननि बुलावै री ।
दंपति होड़ करत आपस मैं, स्याम खिलौना कीन्हौ री ।
सूरदास प्रभु ब्रह्म सनातन, सुत हित करि दोउ लिन्हौ री ॥८६॥

राग रामकली

४ खीझत जात माखन खात ।
अरुन लोचन, भौंह टेढ़ी, बार-बार जँभात ।
कबहुँ रुनझुन चलत घुटुरुनि, धूरि धूसर गात ।

कबहुँ झुकि कै अलक खैंचत, नैन जल भरि जात ।
कबहुँ तोतर बोल बोलत, कबहुँ बोलत तात ।
सूर हरि की निरिखि सोभा, निमिष तजत न मात ॥८८॥

राग आसावरी

५ मैं देख्यो जसुदा को नंदन खेलत आंगन बारो री ।
ततछन प्रान पलटि गयो मेरो तन मन ह्वै गयो कारो री ।
देखत आनि सँच्यो उर अंतर दै पलकनि को तारो री ।
मोहिं भ्रम भयो सखी उर अपनैं चहुं दिसि भयो उज्यारो री ।
जो गुंजा सम तुलत सुमेरहिं ताहू तें अति भारो री ।
जैसें बूंद परत बारिधि में त्यों गुन ज्ञान हमारो री ।
हौं उन मांह कि वै मोहिं महियाँ परत न देह सँभारो री ।
तरु में बीज कि बीज माहं तरु दुहुं में एक न न्यारो री ।
जल थल नभ कानन घर भीतर जहं लौं दृष्टि पसारो री ।
तितहीं तित मेरे नैननि आगें निरतत नंद दुलारो री ।
तजी लाज कुलकानि लोक की पति गुरुजन प्योसारो री ।
जिनकी सकुच देहरी दुर्लभ तिनमें मूंड़ उधारो री ।
टोना टामनि जंत्र मंत्र करि ध्यायो देव दुआरो री ।
सासु ननद घर घर लिए डोलतिं याको रोग बिचारो री ।
कहौं कहा कछु कहत न आवै औ रस लागत खारो री ।
इनहिं स्वाद जो लुब्ध सूर सोइ जानत चाखनहारो री ॥११८॥

राग रामकली

६ मैया कबहिं बढ़ैगी चोटी ।
किती बार मोहिं दूध पियत भई यह अजहूं है छोटी ।
तू जो कहति बल की बेनी ज्यों ह्वै है लांबी मोटी ।
काढ़त गुहत न्हवावत जैहै नागिन सी भुइं लोटी ।
काचो दूध पियावति पचि पचि देति न माखन रोटी ।
सूरदास त्रिभुवन मन मोहन हरि हलधर की चोटी ॥१५२॥

राग रामकली

७ हरि अपनैं आंगन कछु गावत ।
तनक-तनक चरननि सों नाचत, मनहीं मनहीं रिझावत ।
बाहँ उठाइ काजरी-धौरी गैयनि टेरि बुलावत ।
कबहुँक बाबा नंद पुकारत, कबहुँक घर मैं आवत ।

माखन तनक आपनैं कर लै, तनक बदन मैं नावत ।
कबहुँक चितै प्रतिबिंब खंभ में, लोनी लिए खवावत ।
दुरि देखति जसुमति यह लीला, हरष अनंद बढ़ावत ।
सूर स्याम के बाल चरित, नित नित ही देखत भावत ॥१५४॥

राग ललित

८ प्रात भयो जागौ गोपाल ।
नवल सुंदरी आईं बोलत तुमहिं सबै ब्रजबाल ।
प्रगट्यौ भानु मंद भयौ उड़पति फूले तरुन तमाल ।
दरसन कौं टाढ़ी ब्रजवनिता, गूँथि कुसुम बनमाल ।
मुखहिं धोइ सुंदर बलिहारी, करहु कलेऊ लाल ।
सूरदास प्रभु आनँद के निधि, अंबुज-नैन बिसाल ॥१८१॥

राग गौरी

९ मैया मोहिं दाऊ बहुत खिझायो ।
मोसों कहत मोल को लीन्हों तू जसुमति कब जायो ।
कहा करौं इहि रिस के मारें खेलन हौं नहिं जात ।
पुनि पुनि कहत कौन है माता को है तेरो तात ।
गोरे नंद जसोदा गोरी तू कत स्यामल गात ।
चुटकी दै दै ग्वाल नचावत हँसत सबै मुसुकात ।
तू मोहीं कों मारन सीखी दाउहिं कबहुं न खीझै ।
मोहन मुख रिस की ये बातैं जसुमति सुनि सुनि रीझै ।
सुनहु कान्ह बलभद्र चबाई जनमत ही को धूत ।
सूर स्याम मोहिं गोधन की सौं हौं माता तू पूत ॥१८८॥

राग सारंग

१० जेंवत कान्ह नंद इकठौरे ।
कछुक खात लपटात दोउ कर बालकेलि अति भोरे ।
बरा कौर मेलत मुख भीतर, मिरिच दसन टकटौरे ।
तीछन लगी नैन भरि आए, रोवत बाहर दौरे ।
फूँकति बदन रोहिनी ठाढ़ी, लिए लगाइ अँकोरे ।
सूर स्याम कौं मधुर कौर दै कीन्हें तात निहोरे ॥१९७॥

राग रामकली

११ मैया मैं नहिं माखन खायो ।
ख्याल परे ये सखा सबै मिलि मेरैं मुख लपटायो ।
देखि तुही सींके पर भाजन ऊंचे धरि लटकायो ।
हौं जु कहत नान्हें कर अपनैं मैं कैसें करि पायो ।
मुख दधि पोंछि बुद्धि इक कीन्हीं दोना पीठि दुरायो ।
डारि सांटि मुसुकाइ जसोदा स्यामाहिं कंठ लगायो ।
बाल विनोद मोद मन मोह्यो भक्ति प्रताप दिखायो ।
सूरदास जसुमति को यह सुख सिव बिरंचि नहिं पायो ॥२९९॥

राग नटनारायन

१२ चरावत बृंदाबन हरि धेनु ।
ग्वाल सखा सब संग लगाए खेलत हैं करि चैनु ।
कोउ गावत कोउ मुरलि बजावत कोउ बिषान कोउ बेनु ।
कोउ निरतत कोउ उघटि तार दै जुरी ब्रज बालक सैनु ।
त्रिबिध पवन जहं बहत निसादिन सुभग कुंज घन ऐनु ।
सूर स्याम निज धाम बिसारत आवत यह सुख लेनु ॥४०७॥

राग टोड़ी

१३ बूझत स्याम कौन तू गोरी
कहाँ रहति काकी है बेटी देखी नहीं कहूं ब्रजखोरी ।
काहे कों हम ब्रजतन आवतिं खेलति रहतिं आपनी पौरी ।
सुनत रहतिं स्रवननि नँद ढोटा करत फिरत माखन दधि चोरी ।
तुम्हरो कहा चोरि हम लैहैं खेलन चलौ संग मिलि जोरी ।
सूरदास प्रभु रसिक सिरोमनि बातनि भुरइ राधिका भोरी ॥४५५॥

राग रामकली

१४ देखि सखी मोहन मन चोरत ।
नैन कटाच्छ बिलोकनि मधुरी सुभग भृकुटि बिबि मोरत ।
चंदन खौरि ललाट स्याम कें निरखत अति सुखदाई ।
मानहु अर्द्धचंद्र तट अहिनी सुधा चुरावन आई ।
मलयज भाल भ्रकुटि रेखा की कबि उपमा इक पाई ।
मनौ एक सँग गंग जमुन नभ तिरछी धार बहाई ।
भ्रकुटी चारु निरखि ब्रज सुंदरि यह मन करतिं बिचार ।
सूरदास प्रभु सोभा सागर कोउ न पावत पार ॥१२४५॥

राग सोरठ

१५ राधा स्याम की प्यारी ।
कृष्न पति सर्बदा तेरे तू सदा नारी ।
सुनत बानी सखी मुख की जिय भयो अनुराग ।
प्रेम गदगद रोम पुलकित समुझि अपनो भाग ।
प्रीति परगट कियो चाहै बचन बोलि न जाइ ।
नंदनंदन दाम नायक रहे नैननि छाइ ।
हृदय तें कहुं टरत नाहीं कियो निहचल बास ।
सूर प्रभु रस भरी राधा दुरत नहीं प्रकास ॥१२७६॥

राग जैतश्री

१६ मुरली भई रहति लड़बौरी ।
देखति नहीं रैनिहू बासर कैसी लावति ढोरी ।
कर पर धरी अधर के आगें राखति ग्रीब निहोरी ।
पूरत नाद स्वाद सुख पावत तान बजावत गौरी ।
आयसु लिए रहत ताही को डारी सीस ठगौरी ।
सूर स्याम की बुधि चतुराई लीन्ही सबै अँजोरी ॥२४२७॥

राग गौरी

१७ सुनहु सखी याके कुल धर्म ।
तैसोइ पिता मातु तैसी अब देखौ याके कर्म ।
वै बरषत धरनी संपूरन सर सरिता अवगाह ।
चातक सदा निरास रहत है एक बूंद की चाह ।
धरनी जनम देति सबही कों आपुन सदा कुमारी ।
उपजत फिरि ताही में बिनसत छोह न कहुं महतारी ।
ता कुल में यह कन्या उपजी याके गुननि सुनाऊं ।
सूर सुनत सुख होइ तुम्हारैं मैं कहिकै सुख पाऊं ॥२४३१॥

राग सारंग

१८ मधुबन तुम क्यों रहत हरे ।
बिरह वियोग स्याम सुंदर के ठाढ़े क्यों न जरे ।
मोहन बेनु बजावत तुम तर साखा टेकि खरे ।
मोहे थावर अरु जड़ जंगम मुनि जन ध्यान टरे ।
वह चितबनि तू मन न धरत है फिरि फिरि पुहुप धरै ।
सूरदास प्रभु बिरह दबानल नख सिख लौं न जरे ॥२८८१॥

राग कान्हरो

१९ निरगुन कौन देस कौ बासी ।
मधुकर कहि समुझाइ सौंह दै, बूझतिं साँच न हाँसी ।
को है जनक कौन है जननि, कौन नारि को दासी ।
कैसो बरन भेष है कैसो, किहिं रस मैं अभिलाषी ।
पावैगो पुनि कियो आपनौ, जो रे कहैगौ गाँसी ।
सुनत मौन ह्वै रह्यौ बावरौ, सूर सबै मति नासी ॥३२७९॥

राग जैतश्री

२० अति मलीन बृषभानकुमारी ।
हरि स्रम जल भीज्यो उर अंचलतिहिं लालच न धुवावति सारी ।
अध मुख रहति अनत नहिं चितवति ज्यों गथ हारे थकित जुवारी ।
छूटे चिकुर बदन कुम्हिलाने ज्यों नलिनी हिमकर की मारी ।
हरि सँदेस सुनि सहज मृतक भइ इक बिरहिनि दूजे अलि जारी ।
सूरदास कैसे करि जीबैं ब्रज बनिता बिन स्याम दुखारी ॥३६८९॥

राग धनाश्री

२१ राधा माधव भेंट भई ।
राधा माधव माधव राधा कीट भृंग गति ह्वै जु गई ।
माधव राधा के रँग राँचे राधा माधव रंग रई ।
माधव राधा प्रीति निरंतर रसना करि सो कहि न गई ।
बिहँसि कह्यौ हम तुम नहिं अंतर यह कहिकै उन ब्रज पठई ।
सूरदास प्रभु राधा माधव ब्रज बिहार नित नई नई ॥३८३४॥

राग धनाश्री

२२ अब मैं नाच्यो बहुत गोपाल ।
काम क्रोध कौ पहिरि चोलना, कंठ विषय की माल ।
महामोह के नूपुर बाजत, निन्दा सब्द रसाल ।
भ्रम भार्यो मन भयो पखावज, चलत असंगत चाल ।
तृष्ना नाद करति घट भीतर , नाना बिधि दै ताल ।
माया को कटि फेंटा बाँध्यौ, लोभ तिलक दियौ भाल ।
कोटिक कला काछि दिखराई, जल थल सुध नहिं काल ।
सूरदास की सबै अबिद्या दूरि करौ नंदलाल ॥१४९/३९८७॥